# DSSSB PRT, TGT & PGT

दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड

ROJGAR With ANKIT

**Part(A+B)**

## SCHOLAR BATCH

# हिन्दी

**Demo- 03**

# वर्णमाला

**Part- 03**

LIVE 13-03-2024 09:00 AM

# SCHOLAR BATCH

# SCHOLAR BATCH

व्यंजन ⇒ जो वर्ण स्वरों की सहायता लेकर बोले जाते हैं। उन्हें व्यंजन कहते हैं।

इन्हें अच् या हल् के नाम से भी जाना जाता है।

इनकी संख्या 33 होती है।

- 25 स्पर्श
- 4 ऊष्म
- 4 अन्तस्थ:

**स्पर्श व्यंजन** - जिन वर्णों का उच्चारण हमारे शरीर के अंग को छूकर होता है।

इनकी संख्या 25 होती है।

नोट - उच्चारण के आधार पर स्पर्श व्यंजन की संख्या 27 होती है।

इसमें 2 द्विगुण / उत्क्षिप्त व्यंजन जोड़ दिये जाते हैं।

(i) - कण्ठीय व्यंजन ⇒ जिन वर्णों का उच्चारण करने पर जीभ का पिछला हिस्सा हमारे कण्ठ को छूता है उन्हें कण्ठीय व्यंजन कहते हैं।

जैसे - क, ख, ग, घ, ङ ✓

(ii)- तालव्य व्यंजन ⇒ जिन वर्णों का उच्चारण तालु से होता है। उन्हें तालव्य व्यंजन कहते है।

जैसे - च, छ, ज, झ, ञ

(iii)- मूर्धन्य व्यंजन - जिन वर्णों का उच्चारण मूर्धा से होता है। उन्हें मूर्धन्य व्यंजन कहते है।

जैसे - ट, ठ, ड, ढ, ण

(iv)- दन्तीय व्यंजन - जिन वर्णों का उच्चारण करने पर जीभ का अग्र भाग हमारे ऊपर के दांतो को स्पर्श करता है उन्हें दन्तीय व्यंजन कहते है।

जैसे - त, थ, द, ध, न

(v)- औष्ठीय व्यंजन - जिन वर्णों का उच्चारण होंठों से होता है उन्हें ओष्ठीय व्यंजन कहते है।

होंठ

जैसे- प, फ, ब, भ, म

नासिक्य व्यंजन - ङ, ञ, ण, न, म

# स्पर्श व्यंजन

व्यंजन
विसर्ग

**क वर्ग** – क, ख, ग, घ, ङ.

**च वर्ग** – च, छ, ज, झ, ञ

**ट वर्ग** – ट, ठ, ड, ढ, ण

**त वर्ग** – त, थ, द, ध, न

**प वर्ग** – प, फ, ब, भ, म

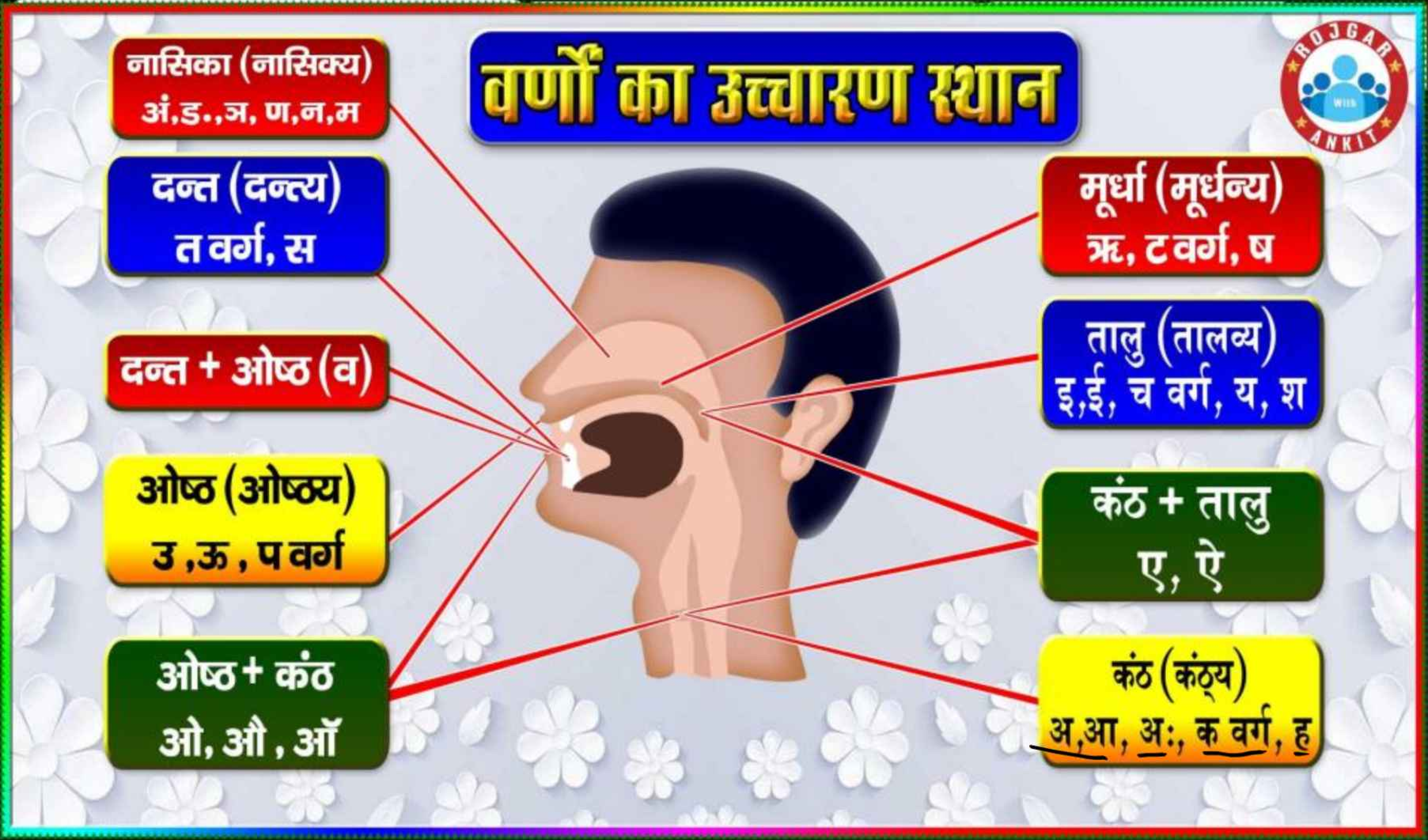

वर्णों का उच्चारण स्थान
नासिका (नासिक्य)
अं,ङ,ञ, ण,न,म
दन्त (दन्त्य)
त वर्ग, स
दन्त + ओष्ठ (व)
ओष्ठ (ओष्ठ्य)
उ ,ऊ , प वर्ग
ओष्ठ + कंठ
ओ, औ , ऑ
मूर्धा (मूर्धन्य)
ऋ, ट वर्ग, ष
तालु (तालव्य)
इ,ई, च वर्ग, य, श
कंठ + तालु
ए, ऐ
कंठ (कंठ्य)
अ,आ, अः, क वर्ग, ह

* अन्तस्थ: व्यंजन - य, व, र, ल

क् → स्वर रहित

* ऊष्म व्यंजन - श, ष, स, ह

* संयुक्त व्यंजन - जो वर्ण दो विभिन्न वर्णों के योग से मिलकर बनते हैं उन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं इनकी संख्या 4 होती है।

जैसे- क्ष - क् + ष

त्र - त् + र

ज्ञ - ज् + ञ

श्र - श् + र

नोट- स्वर रहित व्यंजन जब स्वर सहित व्यंजन से जुड़ता है तब संयुक्ताक्षर बनता है।

# SCHOLAR BATCH | वर्णमाला | हिन्दी

- कण्ठ्य व्यंजन – अः, ह
- तालुव्य व्यंजन – श, य
- मूर्धन्य व्यंजन – ड़, ढ़, र, ष
- दन्तीय व्यंजन – ल, स, ज़
- स्वरतन्त्रीय व्यंजन – ह
- दन्तोष्ठ्य व्यंजन – व

संघर्षहीन व्यंजन – य, व

प्रकम्पित व्यंजन – र

❖ **दन्तमूल (वत्स्र्य) व्यंजन** – इन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जिह्वानीक वर्त्स अर्थात् ऊपरी मसूड़े का स्पर्श करती है या वर्त्स के समीप पहुंचकर एक झटके के साथ मुड़कर पीछे हट जाती है।

वर्त्स्य व्यंजन - न, स, र, ल, ज़, ढ़, ड़

## ❖ लुंठित व्यंजन

– जिस व्यंजन के उच्चारण में जीभ की नोक वायु से रगड़ खाकर कांपती है उसे लुंठित व्यंजन कहते हैं।

जैसे - र

* अयोगवाह व्यंजन - अं, अः

अं → अनुस्वार

अः – विसर्ग

❖ **पार्श्विक व्यंजन** – जिस व्यंजन के उच्चारण में जीभ श्वास वायु के मार्ग में खड़ी हो जाती है तथा वायु उसके बगल से प्रवाह हो जाती है।

जैसे - ल

SCHOLAR BATCH | वर्णमाला | हिन्दी

❖ **काकल्य वर्ण** – जिस व्यंजन ध्वनि के उच्चारण में मुख गुहा खुली रहती तथा वायु बन्द कण्ठ को खोलकर झटके से बाहर निकलती है।

जैसे - ह

**उत्क्षिप्त व्यंजन** – जिन वर्णों का उच्चारण करने पर जीभ ऊपर उठकर तुरन्त नीचे गिरती है।

इसे द्विगुण व्यंजन भी कहते हैं।

⇒ ड़, ढ़

- किसी शब्द की शुरुआत में उत्क्षिप्त व्यंजन प्रयोग नही होता है।

  जैसे – ढोलक, ढक्कन, डमरू

- द्वित्व व्यंजन में उत्क्षिप्त व्यंजन का प्रयोग नही होता है।

  जैसे – कबड्डी, अड्डा, बिल्ली, चक्की, टक्कर

- अंग्रेजी के शब्दों में उत्क्षिप्त व्यंजन का प्रयोग नही होता है।

  जैसे - बोर्ड, रिकार्ड

- ड / ठ के तुरन्त पहले या तुरंत बाद अनुस्वार हो तो उत्क्षिप्त व्यंजन का प्रयोग नही होता है। जैसे – ग्राउंड

**द्वित्व व्यंजन** – जब दो समान व्यंजनों के बीच कोई स्वर न हो।

जैसे- सत्ता, धक्का, अड्डा, कुत्ता, दिल्ली, बिल्ली, कलकत्ता, खट्टा, मक्का, पक्का, लज्जा, रस्सी, पत्ता, कद्दू, पट्टी, मिट्टी आदि।

❖ माँसपेशियों की दृढ़ता के आधार पर व्यंजन – तीन भेद है।

(1) दृढ़ व्यंजन – ट, भ, ढ, ड

(2) शिथिल व्यंजन – क, न, म, य, र, ल

(3) मध्यम व्यंजन – च, ब, श

## ➢ घोषत्व के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण - दो

(i). **घोष/सघोष व्यंजन** – जिन वर्णों के उच्चारण में स्वरतन्त्रिका में कम्पन्न हो ।

जैसे – प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा तथा सभी स्वर, द्विगुढ़ व्यंजन और अन्तस्थः व्यंजन , ह, ज़

क वर्ग – ग, घ, ङ

च वर्ग – ज, झ, ञ

ट वर्ग – ड, ढ, ण

त वर्ग – द, ध, न

प वर्ग – ब, भ, म

**(ii). अघोष व्यंजन** – जिन वर्णों का उच्चारण करने पर स्वरतन्त्रिका में कम्पन्न न हो या केवल श्वास की आवश्यकता हो।

SCHOLAR BATCH | वर्णमाला | हिन्दी

जैसे – प्रत्येक वर्ग का पहला, दूसरा तथा श, ष, स और फ़

क वर्ग – क, ख

च वर्ग – च, छ

ट वर्ग – ट, ठ

त वर्ग – त, थ

प वर्ग – प, फ

## प्राणत्व के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण – दो

(i). अल्पप्राण व्यंजन – कम वायु बाहर निकले

कम वायु

कामता प्रसाद गुरु

अल्पप्राण

महाप्राण

जैसे – प्रत्येक वर्ग का विषम वर्ण (पहला, तीसरा, पाँचवां) एवं अन्तस्थ: व्यंजन और सभी स्वर, ड़ (31)

क वर्ग – क, ग, ङ

च वर्ग – च, ज, ञ

ट वर्ग – ट, ड, ण

त वर्ग – त, द, न

प वर्ग – प, ब, म

**(ii). महाप्राण व्यंजन** – अधिक वायु बाहर निकले।

↓ ↓
अधिक वायु

जैसे – प्रत्येक वर्ग का सम वर्ण (दूसरा, चौथा)

और ऊष्म व्यंजन, ढ़ (15)

क वर्ग – ख, घ

च वर्ग – छ, झ

ट वर्ग – ठ, ढ

त वर्ग – थ, ध

प वर्ग – फ, भ